AKSHANSH PUBLICATION

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर द्वारा आयोजित

लक्ष्य क्लासेज उदयपुर

# राजस्थान वाहन चालक सीधी भर्ती

## सम्पूर्ण स्टडी गाइड

12 दिसम्बर, 2024 को जारी विस्तृत पाठ्यक्रम के अनुसार

### वाहन चालक की परीक्षा स्कीम एवं पाठ्यक्रम

| S.No. | Subject | Marks |
|---|---|---|
| 1 | सामान्य हिन्दी | 30 |
| 2 | सामान्य अंग्रेजी | 15 |
| 3 | सामान्य ज्ञान | 50 |
| 3.1 | भूगोल | 10 |
| 3.2 | इतिहास, कला एवं संस्कृति | 10 |
| 3.3 | भारतीय संविधान एवं राजस्थान राज्य के विशेष संदर्भ में राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था | 10 |
| 3.4 | सामान्य विज्ञान | 5 |
| 3.5 | सम-सामयिक घटनाएं | 10 |
| 3.6 | बेसिक कम्प्यूटर | 5 |
| 4 | सामान्य गणित | 5 |
| | Total | 120 |

आसान, सटीक एवं संपूर्ण अध्ययन अब एक ही पूस्तक से !

नवीन पाठ्यक्रम, संभागों, जिलों, आंकड़ों, राजस्थान की आर्थिक समीक्षा 2023-24 और नवीनतम बजट पर आधारित।

MRP :₹625

सफलता के पथ पर सबसे तेज उभरता हुआ संस्थान
लक्ष्य क्लासेज™
M. 6376957258, 6376491126
Plot No 1104, Shiksha Mandir, Sec 4, Circle, Main Road, Udaipur

**श्री आनंद अग्रवाल**
निदेशक
लक्ष्य क्लासेज, उदयपुर

# दो शब्द...

प्रिय विद्यार्थियों.........

यह पुस्तक बोर्ड अनुसार ज्ञापित सम्पूर्ण नवीनतम पाठयक्रम को ध्यान में रखकर तैयार की गई है जिसके तहत हिन्दी, English, राजस्थान का इतिहास एवं कला-संस्कृति, राजस्थान का भूगोल, भारतीय संविधान एवं राजस्थान की राजनीतिक-प्रशासनिक व्यवस्था, सामान्य विज्ञान, कम्प्यूटर और गणित विषयों की सम्पूर्ण पाठ्यसामग्री दी गई है। साथ ही, इस पुस्तक में सभी विषयों के टॉपिक अनुसार प्रश्नों का विशेष संकलन किया गया है, जो परीक्षा की दृष्टि से अत्यंत उपयोगी है। इस पुस्तक को विषय विशेषज्ञों ने अपने विशिष्ट अनुभव व कौशल से तैयार किया हैं।

यह पुस्तक आगामी परीक्षा की तैयारी को मजबूत बनाने और सफलता प्राप्त करने के उद्देश्य से लिखी गई है, जिससे वे अपनी तैयारी के लिए एक बेहतर रणनीति तैयार कर सकते हैं।

**मार्गदर्शन- लक्ष्य क्लासेज के विषय विशेषज्ञ शिक्षकों के निर्देशन में।**

**पाठ्यसामग्री निर्माता- राजवर्धन बेगड़, गंगासिंह भाटी, जिज्ञासा गहलोत, निशांत सोलंकी और अनोपचन्द मंडा।**

लक्ष्य परिवार आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

**आनंद अग्रवाल**
**निदेशक, लक्ष्य क्लासेज**

लक्ष्य क्लासेस ने इस पुस्तक के तथ्यों तथा विवरणों को उचित स्त्रोतों से प्राप्त किया है। इस पुस्तक में प्रकाशित सभी प्रकार की सामग्री पूर्णतः तथ्यात्मक विश्लेषण पर आधारित है। इस पुस्तक के किसी भी भाग और सामग्री को लक्ष्य क्लासेस की अनुमति और जानकारी के बिना अन्यत्र प्रकाशित या प्रिन्ट करना अनुचित है, यदि ऐसा पाया जाता है तो व्यक्ति या संस्थान स्वयं जिम्मेदार है।

# विषय वस्तु

## 01 सामान्य हिन्दी


| क्र. | अध्याय | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 1. | हिन्दी का सामान्य परिचय | 1 – 4 |
| 2. | वाक्य विचार | 5 – 10 |
| 3. | संज्ञा | 11 – 14 |
| 4. | सर्वनाम | 14 – 17 |
| 5. | क्रिया | 17 – 20 |
| 6. | विशेषण | 20 – 24 |
| 7. | तत्सम एवं तद्भव, देशज एवं विदेशी शब्द | 25 – 28 |
| 8. | संधि | 28 – 41 |
| 9. | उपसर्ग | 41 – 45 |
| 10. | प्रत्यय | 46 – 56 |
| 11. | पर्यायवाची शब्द | 56 – 61 |
| 12. | विलोम शब्द | 62 – 72 |
| 13. | वाक्यांश के लिए एक शब्द | 73 – 78 |
| 14. | शब्द शुद्धि | 78 – 84 |
| 15. | वाक्य शुद्धि | 84 – 88 |
| 16. | काल | 88 – 91 |
| 17. | मुहावरे | 92 – 100 |
| 18. | लोकोक्ति | 101 – 109 |
| 19. | पारिभाषिक शब्दावली | 109 – 117 |
| 20. | समानार्थक शब्द | 118 – 121 |
| 21. | पत्रों से संबंधित ज्ञान | 122 – 124 |


## 02 GENERAL ENGLISH


| S.No. | CHAPTER | PAGE NO. |
|---|---|---|
| 1. | TENSES/SEQUENCE OF TENSES | 126 – 137 |
| 2. | VOICE : ACTIVE AND PASSIVE | 137 – 146 |
| 3. | NARRATION : DIRECT AND INDIRECT | 147 – 156 |
| 4. | USE OF ARTICLES AND DETERMINERS | 157 – 168 |
| 5. | USE OF PREPOSITIONS | 169 – 173 |

| | | |
|---|---|---|
| 6. | TRANSLATIONS OF SIMPLE SENTENCES | 174 – 178 |
| 7. | GLOSSARY OF OFFICIAL, TECHNICAL TERMS | 178 – 196 |
| 8. | TRANSFORMATION OF SENTENCES | 196 – 198 |
| 9. | CORRECTION OF SENTENCES | 199 – 203 |
| 10. | WORDS WRONGLY USED | 203 – 205 |
| 11. | PUNCTUATION | 206 – 208 |


## 03 राजस्थान का इतिहास, कला एवं संस्कृति


| क्र. | अध्याय | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 1. | राजवंश | 210 – 243 |
| 2. | स्वतन्त्रता आन्दोलन | 244 – 258 |
| 3. | राजस्थान का एकीकरण | 258 – 260 |
| 4. | महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व | 261 – 265 |
| 5. | वास्तुकला एवं स्मारक | 266 – 281 |
| 6. | मेले एवं त्योहार | 282 – 285 |
| 7. | लोककलाएँ | 285 – 288 |
| 8. | लोक देवी-देवता | 288 – 294 |
| 9. | लोक नृत्य एवं नाट्य | 295 – 300 |
| 10. | लोक संगीत एवं वाद्ययंत्र | 301 – 308 |
| 11. | भाषा एवं साहित्य | 309 – 314 |
| 12. | वेशभूषा एवं आभूषण | 315 – 322 |
| 13. | संस्कृति एवं सामाजिक जीवन | 322 – 332 |


## 04 राजस्थान का भूगोल


| क्र. | अध्याय | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 1. | स्थिति एवं विस्तार | 334 – 336 |
| 2. | भौतिक स्वरूप एवं विभाजन | 337 – 343 |
| 3. | जलवायु | 344 – 349 |
| 4. | अपवाह तंत्र एवं झीलें | 349 – 357 |
| 5. | सिंचाई परियोजनाएँ | 357 – 361 |
| 6. | वन एवं वन्यजीव | 361 – 366 |
| 7. | मृदा | 367 – 368 |
| 8. | पर्यटन स्थल एवं परिवहन | 369 – 374 |
| 9. | जनसंख्या | 374 – 378 |
| 10. | आपदा प्रबंधन एवं जलवायु परिवर्तन | 379 – 390 |

## 05 भारत का संविधान एवं राजस्थान की राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था


| क्र. | अध्याय | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 1. | संविधान का परिचय एवं आधारभूत लक्षण | 392 – 398 |
| 2. | सूचना का अधिकार अधिनियम | 399 – 401 |
| 3. | राज्यपाल | 401 – 405 |
| 4. | मुख्यमन्त्री एवं मन्त्रिपरिषद् | 405 – 409 |
| 5. | विधानसभा | 409 – 414 |
| 6. | उच्च न्यायालय | 414 – 417 |
| 7. | मुख्य सचिव | 417 – 418 |
| 8. | जिला प्रशासन | 419 – 425 |
| 9. | जिला न्यायिक व्यवस्था | 425 – 427 |


## 06 सामान्य विज्ञान


| क्र. | अध्याय | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 1. | मानव कार्यिकी | 429 – 461 |
| 2. | मानव रोग एवं उपचार | 462 – 467 |
| 3. | आनुवंशिकी | 468 – 473 |
| 4. | अपशिष्ट प्रबंधन | 474 – 475 |
| 5. | भौतिक एवं रासायनिक परिवर्तन | 476 – 481 |
| 6. | धातु, अधातु एवं मिश्र धातु | 481 – 484 |
| 7. | प्रकाश | 485 – 493 |


## 07 कम्प्यूटर


| क्र. | अध्याय | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 1. | कम्प्यूटर का सामान्य परिचय | 495– 499 |
| 2. | इनपुट डिवाइस | 499 – 502 |
| 3. | आउटपुट डिवाइस | 503 – 506 |
| 4. | सेंट्रल प्रोसेसिंग यूनिट (CPU) | 506 – 508 |
| 5. | मैमोरी | 509 – 513 |
| 6. | सॉफ्टवेयर | 513 – 517 |
| 7. | एम. एस. वर्ड | 517 – 523 |
| 8. | एम. एस. एक्सेल | 524 – 535 |
| 9. | एम. एस. पावर पॉइन्ट | 535 – 539 |
| 10. | इंटरनेट | 539 – 545 |

# 08 गणित


| क्र. | अध्याय | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 1. | महत्तम समापवर्तक एवं लघुत्तम समापवर्त्य | 547 – 552 |
| 2. | औसत | 553 – 558 |
| 3. | लाभ-हानि | 558 – 564 |
| 4. | प्रतिशत | 565 – 570 |
| 5. | साधारण ब्याज | 570 – 577 |
| 6. | चक्रवृद्धि ब्याज | 578 – 585 |
| 7. | अनुपात-समानुपात | 585 – 591 |
| 8. | साझा | 591 – 598 |
| 9. | समय एवं कार्य | 598 – 606 |
| 10. | समय, चाल एवं दूरी | 606 – 614 |
| 11. | आँकड़ों का चित्रों द्वारा निरूपण | 615 – 618 |


❑❑❑❑

# सामान्य हिन्दी

# 1 हिन्दी का सामान्य परिचय

- हिन्दी फ़ारसी/पारसी/ईरानी भाषा का शब्द है।
- सिन्धु नदी के पश्चिमी भाग में रहने वाले लोग स को ह उच्चारित करते थे और ध को द बोलते थे।
  इस प्रकार ईरानी लोग सिन्धु नदी को 'हिन्दु' नदी कहते थे, सिंधु नदी के पूर्व में रहने वाले भारतीय लोगों को हिन्दू कहते थे। आर्यों की भाषा हिन्दी कहलायी तथा सिन्धु नदी के पूर्व का भाग हिन्दुस्तान (सिन्धु + स्थान) कहलाया।
  सिन्धु - हिन्दु - हिन्दू - हिन्दी - हिन्दुस्तान
- भारतीय आर्यभाषाओं के इतिहास को तीन कालों खंडों में बाँटा गया है–

(1) प्राचीन भारतीय आर्य भाषा - 1500 ई. पू. - 500 ई.पू. तक
(2) मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा - 500 ई. पू. - 1000 ई. तक
(3) आधुनिक भारतीय आर्य भाषा - 1000 ई. - वर्तमान समय

**संस्कृत**

1. वैदिक संस्कृत (वेद, उपनिषद्) – 1500 ई. पू. - 1000 ई.पू.
2. लौकिक संस्कृत (रामायण, महाभारत) – 1000 ई.पू.- 500 ई.पू.

- **पालि** (बौद्ध ग्रंथ) - 500 ई.पू. - 1 ई.
- **प्राकृत** (जैन ग्रंथ) - 1 ई. - 500 ई.
- **अपभ्रंश** (शौरसेनी) - 500 ई. - 1000 ई.
- **हिन्दी** - 1000 ई. - वर्तमान समय
- हिन्दी का मानक समय - 1100 ई.

**भाषा**

- [भाष् (प्रकट करना) - संस्कृत]
- मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, वह अपने मन के भाव और विचारों को प्रकट करने के लिए जिस माध्यम का प्रयोग करता है, उसे 'भाषा' कहते हैं।
  विशेष– राजस्थानी भाषा दिवस - **21 फरवरी**

**हिन्दी भाषा दिवस - 14 सितंबर**

- संविधान के **भाग-17 के अनुच्छेद 343 से 351** में हिन्दी के **राजभाषा** होने से संबंधित उल्लेख किया गया है।
- **विशेष–** वर्तमान समय में **12 अनुसूची और 22 भाषाओं** में हिन्दी का भी स्थान है लेकिन हिन्दी को कहीं भी राष्ट्रभाषा के रूप में स्थान नहीं दिया गया है बल्कि राजभाषा के रूप में हिन्दी का उल्लेख किया गया है।

**व्याकरण**

- व्याकरण (वि + आ + करण) = 'भली भाँति समझना'
- व्याकरण एक ऐसा ग्रंथ है, जो किसी भाषा के शुद्ध उच्चारण, शुद्ध लेखन और शुद्ध प्रयोग का माध्यम होता है।
- व्याकरण के मूल रूप से तीन अंग होते हैं–
  (1) वर्ण विचार
  (2) शब्द विचार
  (3) वाक्य विचार
- भाषा की सबसे छोटी इकाई - वर्ण
- लिखित रूप से भाषा की सबसे छोटी इकाई - वर्ण
- मौखिक रूप से भाषा की सबसे छोटी इकाई - ध्वनि
- अर्थ के आधार पर भाषा की सबसे छोटी इकाई - शब्द
- भावार्थ के आधार पर भाषा की सबसे छोटी इकाई - वाक्य

**वर्ण विचार**

- भाषा की सबसे छोटी इकाई वर्ण है। इसके और टुकड़े नहीं हो सकते। बोलने-सुनने में जो ध्वनि है, लिखने-पढ़ने में वह वर्ण है।
- वर्ण शब्द का प्रयोग ध्वनि और ध्वनि-चिह्न दोनों के लिए होता है। इस तरह वर्ण भाषा के मौखिक और लिखित दोनों रूपों के प्रतीक हैं। अतः हम वर्ण की परिभाषा इस प्रकार दे सकते हैं- 'वर्ण वह ध्वनि है जिसके और खंड नहीं किए जा सकते।'
- किसी भाषा के सभी वर्गों के व्यवस्थित तथा क्रमबद्ध समूह को उसकी वर्णमाला कहते हैं।
- उस मूल ध्वनि को वर्ण कहते हैं, जिसके टुकड़े न हो सकें, जैसे- क् ख् ग् घ् आदि। इनके टुकड़े नहीं किये जा सकते। इन्हें अक्षर भी कहते हैं। अत: वर्ण या अक्षर भाषा की मूल ध्वनियों को कहते हैं। जैसे- 'घट' पद में घ् अ ट् अ ये मूल ध्वनियाँ हैं, जिन्हें वर्ण या अक्षर कहते हैं। इसी प्रकार अन्य पद भी समझिए, **जैसे**
  राम – र् + आ + म् + अ
  मोहन – म् + ओ + ह् + अ + न् + अ
  पुरुष – प् + उ + र् + उ + ष् + अ
  रमा – र् + अ + म् + आ
  गीता – ग् + ई + त् + आ

**वर्ण के प्रकार**

- हिंदी वर्णमाला में कुल वर्णों की संख्या 52 मानी गई हैं, जो निम्नानुसार है-

**हिन्दी में कुल वर्णों की संख्या – 52**

| स्वर 11 | अयोगवाह 2 | व्यंजन 33 | संयुक्ताक्षर 4 | उत्क्षिप्त व्यंजन 2 |
|---|---|---|---|---|
| अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, ऋ | अं, अ: | क्, ख्, ग्, घ्, ङ्, च्, छ्, ज्, झ्, ञ्, ट् ठ्, ड्, ढ्, ण्, त्, थ्, द्, ध्, न्, प्, फ्, ब्, भ्, म्, य्, र्, ल्, व्, श्, ष्, स्, ह्। | क्ष्, त्र्, ज्ञ्, श्र् | ड़्, ढ़् |

- ये वर्ण दो प्रकार के होते हैं-
  (I) स्वर (II) व्यंजन

**I. स्वर (अच्) :**

- जिन वर्णों या ध्वनियों का उच्चारण करने के लिए अन्य किसी वर्ण की सहायता नहीं लेनी पड़ती तथा जिन वर्गों के उच्चारण में हवा बिना किसी रुकावट के मुँह से बाहर आती है, स्वर कहलाते हैं।
- हिन्दी में स्वरों की संख्या 11 मानी गई हैं, ये हैं- अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, ऋ।

**स्वरों की मात्राएँ**

- 'अ' को छोड़कर प्रत्येक स्वर की मात्रा होती है। जब स्वरों का व्यंजनों के साथ प्रयोग किया जाता है, तो उनकी मात्राओं का ही प्रयोग किया जाता है।

**स्वरों का वर्गीकरण –**

- उच्चारण काल अथवा मात्रा के आधार पर स्वर निम्नलिखित तीन प्रकार के माने गये हैं-

**1. ह्रस्व स्वर –**

- जिन स्वरों के उच्चारण समय में केवल एक मात्रा का समय लगे अर्थात् कम से कम समय लगे, ह्रस्व स्वर कहलाते हैं। इन्हें मूल स्वर भी कहते हैं।
- **जैसे-** अ, इ, उ। इनकी संख्या 3 है।

**2. दीर्घ स्वर –**

- जिन स्वरों के उच्चारण समय में मूल स्वरों की अपेक्षा दुगुना समय, अर्थात् दो मात्राओं का समय लगता है, वे दीर्घ स्वर कहलाते हैं।
- **जैसे –** आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, ॠ,। इनकी संख्या 8 है।
  **नोट –** ए, ओ, ऐ, औ ये मिश्रित स्वर हैं। ये दो स्वरों के मेल से बनते हैं।
  **जैसे –** अ + इ = ए
  अ + ए = ऐ
  अ + उ = ओ
  अ + ऊ = औ

**3. प्लुत स्वर –**

- जिन स्वरों के उच्चारण में दीर्घ स्वरों से भी अधिक समय लगता है, वे प्लुत स्वर कहलाते हैं। इनमें तीन मात्राओं का उच्चारण समय होता है। प्लुत का ज्ञान कराने के लिए ३ का अंक स्वर के आगे लगाते हैं। जैसे-अ ३, इ ३, उ ३, ऋ ३, लु ३, ए ३, ऐ ३, ओ ३, औ ३ !
- प्लुत स्वर का प्रयोग प्राय: दूर से बुलाने में किया जाता है।

**अयोगवाह –**

- हिन्दी में दो अयोगवाह ध्वनिया हैं- अं और अः।
- अनुस्वार (') और विसर्ग (:) दोनों ध्वनियाँ न स्वर हैं और न व्यंजन। इन दोनों के साथ योग नहीं है; अतः ये अयोगवाह कहलाती है।

**अनुनासिक –**

- जो स्वर मुख और नाक से बोले जाते हैं, वे अनुनासिक स्वर कहलाते हैं। इनके ऊपर चंद्र-बिंदु (ँ) लगाया जाता है। नाक की सहायता से बोले जाने के कारण इन्हें 'अनुनासिक' कहा जाता है; जैसे-गाँव, पाँच।

**अनुस्वार –**

- जिस स्वर का उच्चारण करते समय हवा नाक से निकलती है और उच्चारण कुछ जोर से किया जाता है तथा लिखते समय व्यंजन के ऊपर (ं) लगाया जाता है, उसे अनुस्वार कहते हैं। जैसे- कंठ, चंचल, मंच, अंधा, बंदर, कंधा।

**II. व्यंजन**

- जिन वर्गों का उच्चारण स्वरों की सहायता से होता है, वे व्यंजन कहलाते हैं। किसी व्यंजन का उच्चारण तभी किया जा सकता है, जब उसमें स्वर मिला हुआ हो। जिन ध्वनियों का उच्चारण करते समय फेफड़ों से निकलने वाली वायु मुख विवर या स्वर तंत्र के किसी भाग से टकरा कर घर्षण करती हुई या रुक कर बाहर निकलती है, उन्हें व्यंजन ध्वनियाँ कहते हैं।
- हिन्दी वर्णमाला में 33 व्यंजन होते हैं। जैसे-क्, ख्, ग् आदि।
- इनका उच्चारण स्वर लगाकर ही किया जा सकता है, जैसे क् + अ = क, ख् + अ = ख, ग् + अ = ग। स्वर रहित व्यंजन को उसके नीचे हल् ( ् ) चिह्न लगाकर लिखते हैं।

**व्यंजनों का वर्गीकरण –**

- प्रयत्न के आधार पर व्यंजनों के भेद-

**(i) स्पर्श व्यंजन**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| क वर्ग | क् | ख् | ग् | घ् | ङ् |
| च वर्ग | च् | छ् | ज् | झ् | ञ् |
| ट वर्ग | ट् | ठ् | ड् | ढ् | ण् |
| त वर्ग | त् | थ् | द् | ध् | न् |
| प वर्ग | प् | फ् | ब् | भ् | म् |

**(ii) अंतस्थ व्यंजन –** य्, र्, ल्, व्

**(iii) ऊष्म व्यंजन –** श्, ष, स्, ह्

- हिन्दी वर्णमाला में 33 व्यंजनों के अतिरिक्त 4 संयुक्ताक्षर/संयुक्त व्यंजन और 2 उत्क्षिप्त व्यंजन भी होते हैं।

**(iv) संयुक्ताक्षर/संयुक्त व्यंजन –** क्ष्, त्र्, ज्ञ्, श्र्

**(v) उत्क्षिप्त व्यंजन –** ड़, ढ़।

**(vi) व्यंजन गुच्छ –** दो या दो से अधिक व्यंजनों के संयोग से बने अक्षर को व्यंजन गुच्छ कहते हैं। ये निम्नलिखित रूप में होते हैं-

**(क) संयुक्त व्यंजन –** दो असमान व्यंजन संयुक्त होने पर अपना रूप बदल लेते हैं। जैसे – क् + ष् = क्ष्, ज् + ञ् = ज्ञ, श् + र् = श्र्, त् + र् = त्र्, द् + य् = द्य्।

**(ख) 'र' के विशिष्ट रूप –**

(i) जब 'र' (स्वर रहित) किसी व्यंजन से पहले आता है तो उस व्यंजन के शीर्ष पर स्थान पाता है। जैसे– धर्म, कर्म।

(ii) जब 'र' (स्वर रहित) किसी व्यंजन से पहले आता है। तो तिरक्षा (ˊ) रूप या (ˆ) रूप धारण कर लेता है। **जैसे**-प् + थ + म = प्रथम, क् + र + म = क्रम, ड् + र + म = ड्रम, रा + ष् + ट् + र् = राष्ट्र।

**(ग) द्वित्व व्यंजन –** दो समान व्यंजनों का साथ-साथ प्रयुक्त होना द्वित्व कहलाता है। जैसे – बच्चा, बब्बू, कच्ची, सम्मान आदि।

– 'र' पर 'उ' तथा 'ऊ' की मात्रा

– 'र' पर 'उ' और 'ऊ' की मात्राएँ 'र' के नीचे नहीं बल्कि उसके सामने लगाई जाती हैं; जैसे –

– र + उ = रु ; र + ऊ = रू

**अनुस्वार और अनुनासिक में अंतर**

– उच्चारण करते समय जब वायु मुख के साथ-साथ नासिका से भी बाहर निकले, तो ऐसे स्वर अनुनासिक कहलाते हैं, जैसे- पाँच।

**विसर्ग –** विसर्ग (:) का प्रयोग केवल संस्कृत के शब्दों में ही किया है; जैसे- अतः, प्रातः, अंततः, फलतः आदि।

**गृहीत ध्वनियाँ**

– ऑ – इसका प्रयोग केवल अंग्रेजी के शब्दों में किया जाता है। यह 'आ' और 'ओ' के बीच की ध्वनि है।

**जैसे**—बॉल, कॉल, हॉल, डॉक्टर, डॉल आदि।

– 'ज़' और 'फ़'– इनका प्रयोग केवल अरबी-फारसी के शब्दों में किया जाता है; जैसे-कागज, सजा, जरा, शरीफ़, कफ़न, नफ़रत आदि।

– **विशेष-** 'ड़' और 'ढ़' ध्वनियाँ 'ड' और 'ढ' से भिन्न हैं। ये दोनों कभी शब्द के प्रारंभ में नहीं आती।

**अन्य आधार पर व्यंजनों के भेद**

**(क) स्वर-तंत्रियों की स्थिति और कंपन के आधार पर :**

**1. घोष –**

– जिन वर्गों के उच्चारण के समय फेफड़ों से निकलने वाली वायु स्वर-तंत्रियों से टकराकर (नाद) घोष उत्पन्न करती है, वे घोष वर्ण कहलाते हैं। उदाहरणार्थ-प्रत्येक वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ व्यंजन (ग, घ, ङ, ज, झ, ञ, ड, ढ, ण, द, ध, न, ब, भ, म), अंत:स्थ व्यंजन (य, र, ल, व), 'ह' एवं समस्त स्वरों अर्थात् अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ का 'घोष' प्रयत्न है।

**2. अघोष –**

– जिन वर्गों के उच्चारण में फेफड़ों से निकलने वाली वायु स्वर-तंत्रियों से बिना टकराये आसानी से निकल जाती है, वे अघोष वर्ण कहलाते हैं। उदाहरणार्थ-प्रत्येक वर्ग के पहले, दूसरे व्यंजन अर्थात् क्, ख्, च्, छ्, ट्, ठ्, त्, थ्, प्, फ् और श्, ष्, स् का 'अघोष' प्रयत्न है।

**(ख) वायु प्रक्षेप की दृष्टि से :**

**1. अल्पप्राण –**

– जिन वर्गों के उच्चारण में कम हवा (प्राण या श्वास) बाहर निकलती है, वे 'अल्पप्राण' कहलाते हैं। प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा और पाँचवाँ व्यंजन (क्, ग्, ङ्, च्, ज्, ञ्, ट्, ड्, ण्, त्, द्, न्, प्, ब्, म्) य्, र्, ल्, व् तथा सभी स्वर अल्पप्राण हैं।

**2. महाप्राण –**

– जिन वर्गों के उच्चारण में अधिक हवा या श्वास बाहर निकलती है, वे महाप्राण कहलाते हैं। प्रत्येक वर्ग का दूसरा, चौथा व्यंजन (ख्, घ्, छ्, झ्, ठ्, ढ्, थ्, ध्, फ्, भ्), श्, ष्, स्, ह् तथा विसर्ग महाप्राण हैं।

**वर्णों के उच्चारण स्थान**

– फेफड़ों से निकलने वाली वायु मुख के विभिन्न भागों में जिह्वा (जीभ) का सहारा लेकर टकराती है, जिससे विभिन्न वर्णों का उच्चारण होता है। इस आधार पर वर्णों के निम्नलिखित उच्चारण स्थान हैं-

1. **कंठ (गला) –** जिन वर्णों के उच्चारण में जीभ कंठ की ओर मुड़ती है, उनका उच्चारण स्थान 'कंठ' है – अ, आ, अः तथा क वर्ग (क्, ख्, ग्, घ्, ङ्) है। ये कंठ्य' वर्ण कहलाते हैं।
2. **तालु –** जिन वर्णों के उच्चारण में जीभ तालु से स्पर्श करती है, उनका उच्चारण स्थान 'तालु' है – इ, ई, च वर्ग (च्, छ्, ज्, झ्, ञ्), य्, श्। इन्हें 'तालव्य' वर्ण कहा जाता है।
3. **मूर्द्धा –** जिन वर्णों के उच्चारण में जीभ मूर्द्धा (दाँतों से ऊपर खुरदरी जगह) को स्पर्श करती है, उनका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है – ऋ, ट वर्ग (ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्), र्, ष्। ये 'मूर्द्धन्य' वर्ण हैं।
4. **दंत –** जिन वर्णों के उच्चारण में जीभ दाँतों को स्पर्श करती है, उनका उच्चारण स्थान दंत है – त वर्ग (त्, थ्, द्, ध्, न्), ल्, स्। इन्हें 'दन्त्य' वर्ण कहते हैं।
5. **ओष्ठ –** जिन वर्णों के उच्चारण में जीभ के सहयोग से ओष्ठ परस्पर मिलकर कार्य करते हैं, उन्हें 'ओष्ठ्य' कहते हैं – उ, ऊ, प वर्ग (प्, फ्, ब्, भ्, म्)।
6. **नासिका –** प्रत्येक वर्ग के पञ्चमाक्षर के उच्चारण में नासिका भी सहायक होती है। इन वर्णों को 'नासिक्य' कहते हैं – अं, ङ्, ञ्, ण्, न्, म्।
7. **कंठ-तालु** - जिन वर्णों के उच्चारण में जीभ का सहयोग कंठ और तालु के साथ होता है, वे 'कंठ-तालव्य' वर्ण कहलाते हैं - ए, ऐ।

8. **कंठ-ओष्ठ** - जिन वर्णों के उच्चारण में जीभ का सहयोग कंठ और ओष्ठ के साथ होता है, वे 'कंठोष्ठ्य' वर्ण कहलाते हैं – ओ, औ।

9. **दंत-ओष्ठ** - जिन वर्णों के उच्चारण में जीभ का सहयोग दंत और ओष्ठ के साथ होता है, वे 'दंतोष्ठ्य' वर्ण कहलाते हैं – व्, फ्।

10. **स्वर यंत्र –** जिस वर्ण का उच्चारण स्थान स्वर यंत्र होता है, वह 'अलीजिह्वा' वर्ण कहलाता है – ह्।

**वर्ण विच्छेद –**

– शब्द के वर्णों को अलग-अलग करना वर्ण-विच्छेद कहलाता है। इसके ज्ञान द्वारा वर्तनी व उच्चारण की अशुद्धियों से बचा जा सकता है; जैसे-

अचानक – अ + च् + आ + न् + अ + क् + अ

स्वच्छ – स् + व् + अ + च् + छ् + अ

कमल – क् + अ + म् + अ + ल् + अ

## अभ्यास प्रश्न

1. **हिन्दी शब्द किस भाषा का शब्द है-**
(a) अरबी (b) फारसी
(c) ईरानी (d) उपर्युक्त सभी

2. **निम्नलिखित में से अर्द्धस्वर हैं-**
(a) य, व (b) अ, इ
(c) आ, ई (d) ए, ऐ

3. **अर्थ के आधार पर भाषा की सबसे छोटी इकाई होती है-**
(a) वर्ण (b) ध्वनि
(c) शब्द (d) वाक्य

4. **वे वर्ण जिनके उच्चारण में किसी अन्य वर्ण के सहयोग की आवश्यकता नहीं होती, कहलाते हैं-**
(a) स्वर (b) व्यंजन
(c) विसर्ग (d) अयोगवाह

5. **निम्नलिखित में से 'अयोगवाह' वर्ण है-**
(a) अ, आ (b) अं, अः
(c) अ, अः (d) आ, अं

6. **'ह' वर्ण का उच्चारण स्थान होता है-**
(a) कंठ (b) काकल्य
(c) अलजिह्वा (d) उपर्युक्त सभी

7. **निम्नलिखित में से अल्पप्राण वर्ण नहीं है-**
(a) क, ज, ञ (b) च, ड, ण
(c) फ, ब, म (d) त, ब, न

8. **निम्नलिखित में से घोष/सघोष वर्ण हैं-**
(a) अ, ख, ब (b) ई, ख, फ
(c) ऊ, ज, ध (d) ए, थ, भ

9. **यदि ऊपर के होंठ को काट दिया जाए तो किस वर्ण के उच्चारण में असुविधा होगी-**
(a) व (b) ब
(c) व और ब दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

10. **निम्नलिखित में से स्वर रहित 'र्' का उदाहरण है-**
(a) क्रम (b) गृह
(c) ट्रक (d) आशीर्वाद

11. **हिंदी में ध्वनियाँ कितने प्रकार की होती हैं?**
(a) 2 (b) 4
(c) 6 (d) 8

12. **'र' का विवरण है-**
(a) वर्त्स्य, लुंठित, सघोष, अल्पप्राण, व्यंजन
(b) वर्त्स्य, पार्श्विक, सघोष, महाप्राण, व्यंजन
(c) वर्त्स्य, संघर्षी, अघोष, अल्पप्राण, व्यंजन
(d) वर्त्स्य, स्पर्श, सघोष, महाप्राण, व्यंजन

13. **जब एक ध्वनि का द्वित्व हो जाए, तब वह क्या कहलाता है?**
(a) संयुक्त ध्वनियाँ (b) युग्मक ध्वनियाँ
(c) संपृक्त ध्वनियाँ (d) पारस्परिक ध्वनियाँ

14. **स्पर्श व्यंजन, कंठ्य ध्वनि, अघोष और महाप्राण ध्वनि हैं-**
(a) क (b) ग
(c) ख (d) घ

15. **अनुस्वार किसका कार्य करता है?**
(a) विसर्ग का (b) चंद्रबिंदु का
(c) पंचम वर्ण का (d) स्वर का

16. **निम्नलिखित शब्दों में से नवीन विकसित ध्वनियाँ कौन-सी है?**
(a) ख़, ग़ (b) उ, ऊ
(c) ऐ, औ (d) श, स

17. **किन ध्वनियों को 'अनुस्वार' कहा जाता है?**
(a) स्वर के बाद में आने वाली नासिक्य ध्वनियाँ
(b) स्वतंत्र रूप से उच्चरित ध्वनियाँ
(c) स्वर के साथ आने वाली ध्वनियाँ
(d) व्यंजन के बाद में आने वाली ध्वनियाँ

18. **किस शब्द में 'ऋ' स्वर नहीं है?**
(a) कृपा (b) कृष्ण
(c) दृष्टि (d) ग्रह

19. **हिन्दी शब्दकोश में 'क्ष' का क्रम किस वर्ण के बाद आता है?**
(a) क (b) छ
(c) त्र (d) ज्ञ

20. **निम्नलिखित ध्वनियों में कौन-सी दंत्योष्ठ्य है?**
(a) थ (b) फ
(c) म (d) व

**ANSWER KEY**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1. [d] | 2. [a] | 3. [c] | 4. [a] | 5. [b] |
| 6. [d] | 7. [c] | 8. [c] | 9. [b] | 10. [d] |
| 11. [a] | 12. [a] | 13. [b] | 14. [c] | 15. [c] |
| 16. [a] | 17. [a] | 18. [d] | 19. [a] | 20. [d] |

♦ ♦ ♦ ♦

# 2 वाक्य विचार

- वक्ता के अर्थ को पूर्ण रूप से स्पष्ट करने वाले शब्द-समूह को वाक्य कहते हैं।
- भाषा की सबसे छोटी इकाई होती है वर्ण और वर्णों के सार्थक समूह से शब्द निर्मित होते हैं व शब्दों के सार्थक समूह से वाक्य। अर्थात् अगर शब्दों के सार्थक क्रम को बदल दिया जाए तो वक्ता का अभिप्राय स्पष्ट नहीं हो सकेगा-
  जैसे-विभा छत के ऊपर खड़ी है।
  क्रम बदलने पर-छत है विभा के ऊपर खड़ी।
- इस प्रकार शब्दों के सार्थक समूह को वाक्य कहते हैं।
- अर्थ के सम्प्रेषण की दृष्टि से भाषा की पूर्ण इकाई वाक्य है। संरचना की दृष्टि से पदों का सार्थक समूह ही वाक्य है।

**वाक्य के अंग**

- मुख्यत: वाक्य के दो अंग होते हैं-
  1. उद्देश्य
  2. विधेय

**1. उद्देश्य-**

- वाक्य में जिसके संबंध में कुछ कहा जाता है उसे उद्देश्य कहते हैं। वाक्य में कर्ता ही उद्देश्य होता है।

**यथा-**

- 1. दादाजी ने पूजा की।
  2. लड़के खेल रहे हैं।
- इन वाक्यों में दादाजी व लड़कों के बारे में बताया जा रहा है अर्थात् ये दोनों उद्देश्य हैं।

**2. विधेय-**

- उद्देश्य अर्थात् कर्ता के संबंध में वाक्य में जो कुछ भी कहा जाता है, वह विधेय होता है।

**यथा-**

- 1. मोर नाच रहा है।
  2. बालक दूध पी रहा है।

**वाक्य भेद**

- क्रिया, अर्थ तथा रचना के आधार पर वाक्यों के अनेक भेद व उनके प्रभेद किए गए हैं।

**1. क्रिया के आधार पर –**

- क्रिया के अनुसार वाक्य तीन प्रकार के होते हैं-

**(अ) कर्तृवाच्य-**

- जब वाक्य में क्रिया का संबंध सीधा कर्ता से होता है व क्रिया के लिंग, वचन, कर्ता, कारक के अनुसार प्रयुक्त होते हैं, उसे कर्तृवाच्य वाक्य कहते हैं।
  **जैसे-** सीता गाना गा रही है।
  अनुष्क गाना गा रहा है।

**(ब) कर्मवाच्य-**

- जब वाक्य में कर्म को केंद्र में रखकर कथन किया जाता है तथा कर्ता को करण कारक में बदल दिया जाता है। उसे कर्मवाच्य वाक्य कहा जाता है।
  **जैसे-** श्रेया द्वारा खेल खेला गया।
  अयन के द्वारा दूध पीया गया।

**(स) भाववाच्य-**

- जब वाक्य में क्रिया कर्ता व कर्म के अनुसार प्रयुक्त न होकर भाव के अनुसार होती है तो उसे भाववाच्य वाक्य कहते हैं।
  **जैसे-** शगुन से पढ़ा नहीं जाता।
  अक्षिता से पढ़ा नहीं जाता।

**2. अर्थ के आधार पर**

- अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद हैं-

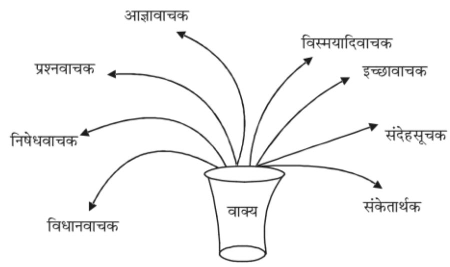


**(1) विधानवाचक वाक्य–**

- जिस वाक्य में किसी काम या बात का होना पाया जाता है, वह विधानवाचक वाक्य कहलाता है।
  **जैसे-** मैं खाता हूँ (काम का होना)।
  शगुन मेरी सहेली है (बात का होना)।

**(2) निषेधात्मक वाक्य –**

- जिस वाक्य में किसी बात के न होने या काम के अभाव या नहीं होने का बोध हो, वह निषेधात्मक वाक्य कहलाता है।
  **जैसे-** सड़क पर मत भागो ।
  अनुष्क घर पर नहीं है।

**(3) प्रश्नवाचक/प्रश्नार्थक वाक्य –**

- प्रश्न का बोध कराने वाला वाक्य अर्थात् जिस वाक्य का प्रयोग प्रश्न पूछने में किया जाए उसे प्रश्नार्थक वाक्य कहते हैं।
  **जैसे-** आप कहाँ जा रहे हैं?
  तुम क्या खेल रहे हो?

**(4) आज्ञावाचक वाक्य –**

- जिस वाक्य में आज्ञा, अनुमति, उपदेश व विनय का बोध हो, वह आज्ञार्थक/आज्ञावाचक वाक्य कहलाता है।
  **जैसे-** अनुष्क अपना कमरा साफ करो। (आज्ञा)
  अयन इस कुर्सी पर बैठो।

**(5) विस्मयादिबोधक वाक्य –**

– जिस वाक्य में हर्ष, शोक, घृणा व विस्मय आदि भाव प्रकट होते हैं, वह विस्मयादिबोधक वाक्य कहलाता है।

**जैसे-** अरे! यह क्या हो गया !

वाह ! कितना सुंदर दृश्य है!

**(6) इच्छावाचक/इच्छार्थक वाक्य –**

– जिस वाक्य में किसी आशीर्वाद, इच्छा कामना का बोध हो, उसे इच्छावाचक वाक्य कहते हैं।

**जैसे-** ईश्वर सबका भला करे ! (इच्छा)

आपका जीवन सुखमय हो !

**(7) संभावनार्थक वाक्य –**

– जिस वाक्य में किसी काम के पूरा होने में संदेह या संभावना का भाव प्रकट हो, उसे संदेहवाचक वाक्य कहते हैं।

**जैसे-** शायद वे कल आएँ।

हो सकता है कल तक मौसम ठीक हो जाए।

**(8) संकेतार्थक वाक्य –**

– जिस वाक्य में संकेत या शर्त हो, वह संकेतार्थक वाक्य कहलाता है।

**जैसे-** यदि तुम आओ तो मैं चलूँ।

वर्षा न होती तो, फसल सूख जाती।

**रचना के आधार पर वाक्य के भेद**

– रचना के आधार पर वाक्य तीन प्रकार के होते हैं–

(i) सरल वाक्य

(ii) मिश्र या मिश्रित वाक्य

(iii) संयुक्त वाक्य

**(i) सरल वाक्य–**

– जिस वाक्य में एक उद्देश्य व एक ही विधेय होता है, उसे साधारण या सरल वाक्य कहते हैं अर्थात् एक कर्ता व एक ही क्रिया होती है।

**जैसे-** मै जाता हूँ।

**(ii) मिश्र वाक्य / मिश्रित वाक्य–**

– जिस वाक्य में एक मुख्य उपवाक्य हो तथा उसके साथ अन्य आश्रित उपवाक्य हों, उसे मिश्र वाक्य कहते हैं। मिश्र वाक्य व उप वाक्यों को जोड़ने का काम समुच्चयबोधक अव्यय करते हैं। (चूँकि, क्योंकि, जब, तब, अर्थात्, यदि, तो, ताकि, तदापि) ।

**जैसे-**

वे मेरे घर आएँगे, क्योंकि उन्हें अजमेर शहर घूमना है।

वे मेरे घर आएँगे (प्रधान वाक्य) क्योंकि (योजक)

उन्हें अजमेर शहर घूमना है। (आश्रित उप वाक्य)

मैं जानता हूँ कि तुम्हें अजमेर जाना है।

**(i) प्रधान उपवाक्य –**

– जो वाक्य मुख्य उद्देश्य व मुख्य विधेय से बना हो उसे प्रधान उप वाक्य कहते हैं।

**(ii) आश्रित उपवाक्य –**

– वाक्य से छोटी इकाई उपवाक्य होती है अर्थात् जो उपवाक्य प्रधान उपवाक्य के आश्रित रहता है, उसे आश्रित उपवाक्य कहते हैं।

**आश्रित उपवाक्य तीन प्रकार के होते हैं-**

– 1. संज्ञा उपवाक्य

2. विशेषण उपवाक्य

3. क्रियाविशेषण उपवाक्य

**1. संज्ञा उपवाक्य**

– ऐसे उपवाक्य जो वाक्य में संज्ञा की तरह काम करें अर्थात् किसी कर्ता, कर्म तथा पूरक का काम देते हैं, वे संज्ञा उपवाक्य कहलाते हैं। इस वाक्य में प्रायः कि, का प्रयोग होता है।

**जैसे-** मैंने देखा कि शगुन गा रही है।

संज्ञा उपवाक्य में प्रायः 'कि' का लोप भी हो जाता है-

मैंने सुना है वे कल आएँगे।

कर्म- मैं कहता हूँ कि वह शहर गया। 'वह शहर गया' 'कहता हूँ' का कर्म है।

पूरक- उनकी इच्छा है कि मैं खाना खाऊँ। 'कि मैं खाना खाऊँ' 'है' क्रिया का पूरक है।

**2. विशेषण उपवाक्य-**

– वे उपवाक्य जो प्रधान वाक्य में कर्ता अथवा कर्म या संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बताते हैं उन्हें विशेषण आश्रित उपवाक्य कहते हैं। विशेषण उपवाक्य का प्रारम्भ प्रायः जो, जिसकी, जिसका, जिसके आदि शब्दों से होता है।

**जैसे-** जिससे आपको काम था, वह व्यक्ति चला गया।

**3. क्रिया विशेषण उपवाक्य –**

– जो प्रधान उपवाक्य की क्रिया की विशेषता बताते हैं, वे क्रिया विशेषण उपवाक्य कहलाते हैं। ये क्रिया के घटित होने का स्थान, दिशा, कारण, परिणाम, रीति आदि की सूचना देते हैं।

**जैसे-** यदि दिनभर खेलोगे तो कब पढ़ोगे।

क्रिया विशेषण उपवाक्य कि, क्योंकि, जो, यदि, तो, अगर, यद्यपि, इसलिए, भी, इतना आदि अव्यय पदों द्वारा अन्य वाक्यों से मिलाते हैं।

**(iii) संयुक्त वाक्य –** जिस वाक्य में दो या दो से अधिक साधारण वाक्य या प्रधान उपवाक्य या समानाधिकरण उपवाक्य किसी संयोजक शब्द (तथा, एवं, या, अथवा, और, परंतु, लेकिन, किंतु, बल्कि, अतः आदि) से जुड़े हों, उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं। जैसे भरत आया किंतु भूपेंद्र चला गया।

(समानाधिकरण वाक्य ऐसे उपवाक्य जो प्रधान उपवाक्य या आश्रित उपवाक्य के समान अधिकार वाले हों उन्हें समानाधिकरण उपवाक्य कहते हैं।)

**वाक्य विश्लेषण**

– रचना के आधार पर निर्मित वाक्यों को उनके अंगों सहित अलग कर उनका परस्पर संबंध बताना वाक्य विश्लेषण या वाक्य-विग्रह कहलाता है।

**1. सरल वाक्य का विश्लेषण –**

– सरल वाक्य के वाक्य विश्लेषण में सर्वप्रथम वाक्य के दो अंग उद्देश्य व विधेय को बताना होता है उसके बाद उद्देश्य के अंग कर्ता व कर्ता का विस्तार तथा विधेय के अंतर्गत कर्म व कर्म का विस्तारक, पूरक, पूरक का विस्तारक जो भी हो उनका उल्लेख करना होता है।

**जैसे-**

(क) सभी मित्र दिल्ली का लाल किला देखने चले गए।

(ख) मेरी बहन श्रेया कहानियों की पुस्तकें बहुत पढ़ती है।

| | **उद्देश्य** | | | **विधेय** | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | **कर्ता** | **कर्ता का विस्तार** | **कर्म** | **कर्म का विस्तार** | **पूर** | **पूरक का विस्तारक** | **क्रिया** | **क्रिया का विस्तारक** |
| **क** | मित्र सभी | लाल किला | दिल्ली का | – | – | देखने | देखने | – |
| **ख** | श्रेया | मेरी बहन | पुस्तकें | कहानियों | - | - | पढ़ती है | बहुत |
| **(ग) जयपुर का सिटी पैलेस दर्शनीय स्थल है।** | | | | | | | | |
| **उद्देश्य** | | | | **विधेय** | | | | |
| | **कर्ता** | **कर्ता का विस्तारक** | **कर्म** | **कर्म का विस्तारक** | **पूरक** | **पूरक का विस्तारक** | **क्रिया** | **क्रिया का विस्तारक** |
| **ग** | सिटी पैलेस | जयपुर का | – | – | स्थल | दर्शनीय | है | – |

**2. मिश्रित वाक्य या मिश्रवाक्य का विश्लेषण-**

– मिश्रित या मिश्र वाक्य के विश्लेषण में उसके प्रधान तथा आश्रित उपवाक्य एवं उसके प्रकार का उल्लेख किया जाता है।

**जैसे-**

(क) मेरे जीवन का लक्ष्य है कि मैं राष्ट्रपति बनूँ।

(ख) प्रांशु कल कॉलेज नहीं गया क्योंकि वह बीमार था।

| | **उपवाक्य** | **वाक्य भेद** | **कार्य** | **योजक** | **कर्ता** | **कर्ता का विस्तार** | **क्रिया** | **कर्म** | **पूरक** | **पूरक विस्तार** |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **(क)** | **मेरे जीवन का लक्ष्य है** | प्रधान उपवाक्य | – | – | जीवन का | – | है | लक्ष्य | – | – |
| | **मैं राष्ट्रपति बनूँ** | आश्रित संज्ञा उपवाक्य | प्रधान उपवाक्य की क्रिया का कर्म | कि | मैं | बनूँ | – | राष्ट्रपति | – | – |
| **(ख)** | **प्रांशु कल कॉलेज नहीं गया** | प्रधान उपवाक्य | – | – | प्रांशु | – | नहीं | – | – | कल |
| | **वह बीमार था** | आश्रित क्रिया विशेषण उपवाक्य | – | क्योंकि | वह (उसे) | – | था | – | बुखार | – |

**3. संयुक्त वाक्य का विश्लेषण-**

– संयुक्त वाक्य के विश्लेषण में समानाधिकरण उपवाक्यों या साधारण वाक्यों के उल्लेख के साथ उन्हें जोड़ने वाले योजक शब्द का भी उल्लेख करना होता है। जैसे-

1. अनुष्क ने पुस्तक पढ़ी और सो गया।
2. सबने आपकी बहुत प्रतीक्षा की पर आप नहीं आए।

| | उपवाक्य | वाक्य भेद | योजक | कर्ता | कर्ता का विस्तार | क्रिया | क्रिया का विस्तार | कर्म | कर्म का विस्तारक | विधेय |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | **अनुष्क ने पुस्तक पढ़ी** | प्रधान उपवाक्य | – | अनुष्क | – | पढ़ी | – | पुस्तक | – | – |
| | **सो गया** | समानाधिकरण उपवाक्य | और | वह (लुप्त) | सो गया | – | – | – | – | – |
| 2. | **सबने आपकी बहुत प्रतीक्षा की** | | – | सबने | – | प्रतीक्षा की | – | आपकी | – | बहुत |
| | **आप नहीं आए** | समानाधिकरण | पर | – | – | आए | नहीं | आप | – | – |

**वाक्य संश्लेषण**

– वाक्य विश्लेषण में वाक्य में आए उपवाक्यों को अलग किया जाता है लेकिन वाक्य संश्लेषण में अलग-अलग वाक्यों को मिलाकर एक वाक्य बना दिया जाता है। कालांश लगा। गुरु जी आए। कक्षा में पढ़ाया। दूसरी कक्षा में चले गए।

– वाक्य संश्लेषण में इन चार वाक्यों से एक बनाया जाता है-

**उदाहरण 1**

– 1. कालांश लगते ही गुरु जी एक कक्षा में पढ़ाकर दूसरी कक्षा में चले गए। **(सरल वाक्य)**

2. कालांश लगते ही गुरु जी कक्षा में आए और पढ़ाकर दूसरी कक्षा में चले गए। **(संयुक्त वाक्य)**

3. कालांश लगा ही था कि गुरु जी कक्षा में पढ़ाने आए, फिर दूसरी कक्षा में चले गए। **(मिश्रित वाक्य)**

**उदाहरण 2**

– 1. हमारे घर से बाहर निकलते ही आसमान में बादल छाने लगे। **(सरल वाक्य)**

2. हम घर से बाहर निकले और आसमान में बादल छाने लगे। **(संयुक्त वाक्य)**

3. जैसे ही हम घर से बाहर निकले, आसमान में बादल छाने लगे। **(मिश्रित वाक्य)**

**उदाहरण 3**

– 1. बच्चे खेलने के लिए मैदान में गए थे। **(सरल वाक्य)**

2. बच्चों को खेलना था अतः मैदान में गए थे। **(संयुक्त वाक्य)**

3. बच्चे मैदान में गए थे क्योंकि उन्हें खेलना था। **(मिश्रित वाक्य)**

**वाक्य के आवश्यक तत्त्व**

**1. सार्थकता-**

– वाक्य में हमेशा सार्थक शब्दों का ही प्रयोग होना चाहिए।

**जैसे-** मैं आप सबको धन्यवाद देना चाहता हूँ।

**2. पदक्रम-**

– वाक्य का सही अर्थ ग्रहण करने के लिए एक निश्चित क्रम होना चाहिए यदि क्रम बदल जाता है तो कथन का अर्थ बदल जाता है।

**जैसे-** बच्चे को काटकर फल दो।

सही क्रम-फल काटकर बच्चे को दो।

**3. निकटता-**

– पदों के बीच अगर अंतर रहता है तो वह अर्थ ग्रहण में बाधक रहता है। इसलिए वाक्य के पदों में परस्पर निकटता होना अनिवार्य है।

– वाक्य में स्वाभाविक ठहराव की आवश्यकता होती है परंतु प्रत्येक शब्द के बाद ठहरना या रुक-रुककर बोलना अशुद्ध होता है।

**जैसे-** उसने ........ मेरा......... गाना.........सुना। (उसने मेरा गाना सुना)

**4. पूर्णता-**

– वाक्य अपने आप में पूर्ण होना चाहिए इसमें शब्दों की कमी होने से अर्थ का अनर्थ हो जाता है।

**जैसे-** कमल पीता है।

**शुद्ध -** कमल दूध पीता है।

**वाक्य में पद क्रम**

– वाक्य रचना में पदक्रम का विशेष महत्त्व होता है। अतः वाक्य रचना करते समय कर्ता, कर्म और क्रिया का क्रम ध्यान में रखना आवश्यक है। अतः इन नियमों को जानना आवश्यक है-

**1.** वाक्य में कर्ता और कर्म के बाद में क्रिया आती है।

**जैसे-** अनुष्क खाना खा रहा है।

**2.** कर्ता, कर्म तथा क्रिया के (विस्तारक) पूरक इनसे पूर्व में आते हैं।

**जैसे-** भूखा भिखारी स्वादिष्ट खाना जल्दी-जल्दी खा गया।

**3.** क्रिया विशेषण क्रिया से पहले प्रयोग में आता है।

**जैसे-** धावक तेज दौड़ता है।

**4.** पूर्वकालिक क्रिया मुख्य क्रिया से पहले आती है।

**जैसे-** वह खाना खाकर सो गया।

**5.** संबोधन और विस्मयादिबोधक प्रायः वाक्य के आरंभ में आते हैं।

**जैसे-** अनुष्क ! इधर बैठो !

वाह! कितना सुन्दर महल है!

**6.** निषेधात्मक वाक्यों में 'न' अथवा 'नहीं' का प्रयोग प्रायः क्रिया से पहले किया जाता है।

**जैसे-** रमेश बाजार नहीं जाएगा।

7. सार्वजनिक विशेषण अन्य विशेषण से पूर्व आता है।
**जैसे-** मेरी छोटी बहिन।
8. पदवी या व्यवसाय सूचक शब्द नाम से पहले आते हैं।
**जैसे-** पं. रामसहाय, डॉ. अक्षत, प्रो. शगुन।
9. मिश्र या संयुक्त वाक्यों में योजक का प्रयोग दो उपवाक्य के बीच होता है।
**जैसे-** घर पर काम था इसलिए वह नहीं आया।
जब कार्य समाप्त हुआ तब वे घर चले गए।
10. मिश्र वाक्य की संरचना में प्रधानवाक्य आश्रित उप वाक्य के पहले आता है।
**जैसे-** जो परिश्रम करता है, उसे सब पसंद करते हैं।

**वाक्य में क्रिया का अन्वय**

– वाक्य रचना में पदों के संबंध व क्रम का विशेष ध्यान रखा जाता है। पदों के इसी क्रम या संबंध को 'मेल या अन्वय' कहते हैं। अन्वय का अर्थ 'संबद्धता' है, अर्थात् वाक्य में पदों का उचित मेल होना आवश्यक है-

**कर्ता व क्रिया का अन्वय-**

1. वाक्य में कर्ता के परसर्ग का प्रयोग नहीं हुआ हो तो क्रिया का लिंग, वचन और पुरुष कर्ता के अनुसार होता है।
**जैसे-** मोहन गाना गाता है।
राधा गाना गाती है।
2. वाक्य में विभक्ति रहित एक ही लिंग, वचन, पुरुष के कर्ता हो तो क्रिया उसी लिंग के बहुवचन में होगी।
**जैसे-** अनुष्क, अमन, अक्षत खाना खा रहे हैं।
श्रेया, शगुन गाना गा रही हैं।
3. आदर का भाव प्रकट करने वाले एक वचन कर्ता के साथ भी क्रिया का बहुवचन में प्रयोग होता है।
**जैसे–** पिता जी कल आ रहे हैं। भाई साहब खाना खा रहे हैं।
4. भिन्न लिंग, वचन के विभक्ति रहित एक वाक्य के कर्ता और, तथा आदि शब्दों से जुड़े हों तो क्रिया बहुवचन पुल्लिंग में होगी।
**जैसे-** अनुष्क व शगुन खेल रहे हैं।
5. हिन्दी में आँसू, हस्ताक्षर, प्राण, दर्शन, होश आदि शब्दों का प्रयोग सदैव बहुवचन में होता है।
**जैसे-** ये हस्ताक्षर मेरे हैं।
मेरी आँखों में आँसू आ गए।

**कर्म और क्रिया का अन्वय-**

1. यदि वाक्य में कर्ता विभक्ति सहित और कर्म विभक्ति रहित हो तो क्रिया का लिंग, वचन व पुरुष कर्म के अनुसार होंगे।
**जैसे-** श्रेया ने गाना गाया।
प्रांशु ने पुस्तक पढ़ी।
2. यदि कर्ता और कर्म दोनों के साथ विभक्ति हो तो क्रिया एकवचन पुल्लिंग व अन्य पुरुष होती है।
**जैसे-** राम ने चोर को पकड़ा।
अनुष्क ने अक्षत को देखा।
3. यदि कर्ता के साथ विभक्ति 'ने' लगा हो और वाक्य में दो कर्म हो तो क्रिया अंतिम कर्म के अनुसार लगती है।
**जैसे-** अनुष्क ने पुस्तक और पेंसिल खरीदा।
अमन ने मिठाई व फल खरीदे।

**संज्ञा और सर्वनाम का अन्वय-**

1. अगर सर्वनाम का प्रयोग अनेक संज्ञाओं के स्थान पर हो तो वह बहुवचन में प्रयुक्त होता है।
**जैसे-** श्रेया, शगुन विद्यालय गई हैं, वे शाम को घर लौटेंगी।
2. एक संज्ञा के स्थान पर एक ही सर्वनाम का प्रयोग होना चाहिए।
**जैसे-** राम ने श्याम से कहा, तुम जाओ, लड़के तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं।
3. जिस संज्ञा के स्थान पर सर्वनाम प्रयुक्त हुआ है वचन उसी संज्ञा के अनुरूप होता है।
**जैसे-** सीता ने कहा वह गाना गाएगी।

**विशेषण व विशेष्य का अन्वय**

1. अगर वाक्य में एक से अधिक विशेष्य हों तो विशेषण अपने निकट विशेष्य के अनुसार होगा।
**जैसे-** काली साड़ी, पीला कुर्ता लाओ।
पीला कुर्ता काली साड़ी लाओ।
2. आकारांत विशेषण-विशेष्य के लिंग, वचन के अनुसार बदल जाते हैं।
**जैसे-** तुम काला कुर्ता पहनो।
तुम काली साड़ी पहनो।
3. किंतु अन्य विशेषणों में विशेष्य के अनुरूप परिवर्तन नहीं होता है।
**जैसे-** नीली कमीज, नीली साड़ी

## अभ्यास प्रश्न

1. **सूची I के साथ सूची II का मिलान कीजिए-**

| सूची I | सूची II |
|---|---|
| **A. परिश्रमी व्यक्ति अच्छे लगते हैं।** | **I. मिश्र वाक्य** |
| **B. मालिक ने कहा कि कल छुट्टी रहेगी।** | **II. सरल वाक्य** |
| **C. वह आया और कुछ नहीं कहा।** | **III. प्रश्नवाचक वाक्य** |
| **D. आप क्यों नहीं खाते हैं?** | **IV. संयुक्त वाक्य** |

**नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:**
(a) A-I, B-II, C-IV, D-III (b) A-II, B-I, C-IV, D-III
(c) A-I, B-II, C-III, D-IV (d) A-III, B-II, C-IV, D-I

**2. निम्नलिखित में से 'सरल वाक्य' का उदाहरण कौन-सा है?**
(a) शिक्षक के सामने बच्चे शांत रहते हैं।
(b) जब तक शिक्षक रहते हैं, बच्चे शांत रहते हैं।
(c) शिक्षक रहते हैं तब बच्चे शांत रहते हैं।
(d) शिक्षक के बिना बच्चे शांत रहते हैं।

**3. असंगत विकल्प चुनिए-**
(a) विधानवाचक वाक्य - रमाकांत पुस्तकें लाया।
(b) आज्ञावाचक वाक्य - हमारी प्रार्थना स्वीकार करें।
(c) संदेहवाचक वाक्य - शायद वर्षा हो।
(d) इच्छाबोधक वाक्य - जाइए, जल्दी कीजिए।

**4. किस वाक्य में 'विशेषण उपवाक्य' सम्मिलित है?**
(a) मैं नहीं जानता कि वह कहाँ है।
(b) जब पानी बरसता है, तब मेंढक बोलते हैं।
(c) राम ने कहा कि मैं पढ़ूँगा।
(d) वह आदमी जो कल आया था, आज भी आया है।

**5. निम्नलिखित में से 'साधारण वाक्य' है-**
(a) पत्ते सूख रहे हैं, इसलिए पीले दिखाई देते हैं।
(b) काम सीखा हुआ नौकर कठिनाई से मिलता है।
(c) मेरा भाई यहाँ आएगा या मैं ही उसके पास जाऊँगा।
(d) जब सबेरा हुआ, तब हम लोग बाहर गए।

**6. निम्नलिखित में से 'संकेतार्थक' वाक्य है-**
(a) जो मैं उसको पहले जानता तो उसका विश्वास न करता।
(b) यह पत्र उसने लिखा होगा।
(c) ईश्वर तुम्हें चिरायु करे।
(d) जो काम तुम्हें दिया गया है, उसे देखो।

**7. 'रमेश के भाई मोहन ने अपने मित्रों को दीपावली की मिठाई खिलाई।' इस वाक्य में 'उद्देश्य' है-**
(a) दीपावली की मिठाई (b) अपने मित्रों को
(c) मोहन ने (d) रमेश के भाई

**8. निम्नलिखित में से संयुक्त वाक्य का चयन कीजिए-**
(a) जब मैं स्टेशन पर पहुँचा गाड़ी आ चुकी थी।
(b) हम घर से बाहर निकले और बारिश होने लगी।
(c) विद्वान मनुष्य का सभी सम्मान करते हैं।
(d) वह साड़ी खरीदने बाज़ार गई।

**9. निम्नलिखित में से मिश्र वाक्य का उदाहरण छाँटिए-**
(a) जो कवि लोकप्रिय होता है, उसका सम्मान सभी करते हैं।
(b) अच्छे लड़के परिश्रमी होते हैं।
(c) वह अस्वस्थ था और इसलिए परीक्षा में सफल न हो सका।
(d) हम खाना खा चुके।

**10. 'प्रभा एक सुशील कन्या है' वाक्य में विशेष्य है-**
(a) प्रभा (b) कन्या
(c) एक (d) सुशील

**11. व्याकरण की दृष्टि से कौन-सा कथन सही नहीं है?**
(a) हिन्दी में तीन वाच्य माने गये हैं, कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य।
(b) रचना की दृष्टि से वाक्य के तीन भेद माने गये हैं, साधारण वाक्य, मिश्र वाक्य और संयुक्त वाक्य।
(c) कर्ता और क्रिया वाक्य रचना के आवश्यक घटक हैं।
(d) क्रिया को उद्देश्य और कर्ता को विधेय कहते हैं।

**12. किस विकल्प में मिश्रवाक्य का प्रयोग नहीं हुआ है?**
(a) वह थोड़ी देर बाद तुरन्त लौट गया।
(b) मै चाहता हूँ कि आप यही रहें।
(c) जब मैं स्टेशन पहुँचा, तभी ट्रेन आई।
(d) जिन छात्रों ने परिश्रम किया वे उत्तीर्ण हो गए।

**13. 'अब तक बच्चे छात्रावास पहुँच चुके होंगे।' अर्थ की दृष्टि से उक्त वाक्य है-**
(a) इच्छार्थक (b) विधानार्थक
(c) संदेहार्थक (d) संकेतार्थक

**14. निम्नलिखित में 'संदेहार्थक' वाक्य कौन-सा है?**
(a) वह जहाँ रहे, सुख से रहे।
(b) आज शाम को शायद वर्षा हो।
(c) जो काम तुम्हें दिया गया है, उसे देखो।
(d) वह नहीं आया इसलिए हम नहीं गए।

**15. 'यदि परिश्रम किया होता, तो सफलता अवश्य मिलती।' वाक्य प्रकार की दृष्टि से उक्त वाक्य है-**
(a) संकेतार्थक (b) आज्ञार्थक
(c) विधानार्थक (d) इच्छार्थक

**16. 'क्रियाविशेषण उपवाक्य' का उदाहरण है-**
(a) वह ईमानदार है, इसलिए सबका विश्वासपात्र है।
(b) वह धनवान है, परंतु बहुत दुखी है।
(c) यदि तुम चलते तो, मैं भी अवश्य चलता।
(d) जो लोग साहसी होते हैं, वे सफल होते हैं।

**17. 'संयुक्त वाक्य' का उदाहरण है**
(a) वह धन के अभिमान में अकड़कर चलता
(b) मैं अस्वस्थ था, इसलिए मन लगाकर नहीं पढ़ सका।
(c) बस छूट जाने के कारण मैं गाँव नहीं गया।
(d) जहाँ खेत थे, वहाँ शहर बस गया।

| ANSWER KEY | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1. [b] | 2. [a] | 3. [d] | 4. [d] | 5. [b] |
| 6. [a] | 7. [c] | 8. [b] | 9. [a] | 10. [b] |
| 11. [d] | 12. [a] | 13. [c] | 14. [b] | 15. [a] |
| 16. [c] | 17. [b] | | | |

♦ ♦ ♦ ♦

मुश्किल परीक्षाऐं भी आसान लगेगी
जब तैयारी होगी लक्ष्य के साथ

लक्ष्य क्लासेज उदयपुर

**OFFLINE & LIVE FROM CLASSROOM**

# वाहन चालक सीधी भर्ती

**New Course Launch**

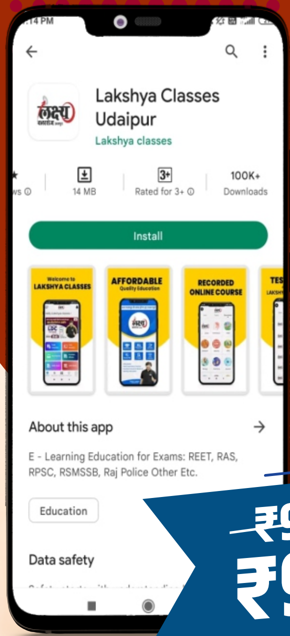


~~₹9999/-~~ **₹999/-**

**LIVE कोर्स के साथ में पाएं**
**FREE RECORDED COURSES**

## • OUR LAUNCHED BOOKS •

INSTAGRAM | FACEBOOK | YOUTUBE | TELEGRAM

सफलता के पथ पर सबसे तेज उभरता हुआ संस्थान
**लक्ष्य क्लासेज™**

**M. 6376957258, 6376491126**
Plot No 1104, Shiksha Mandir, Sec 4, Circle, Main Road, Udaipur